रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन्स सेंटर उत्तर प्रदेश द्वारा सम्पादित की जा रही सरकार की जन कल्याणकारी योजनाएं एवं उनकी उपलब्धियां

1.<u>उत्तरप्रदेश के पठारी क्षेत्रों में भूजल अन्वेषणः</u>

बुन्देलखण्ड के पठारी क्षेत्रों में पेयजल एवं सिचाईं हेतु संसाधनों की कमी के कारण सतही जल श्रोतो काअधिकाधिक उपयोग हो रहा है, इस कारण से सतही जल श्रोतों से वर्ष पर्यन्त जल प्राप्त नहीं हो पाता है, इस समस्या के समाधान के उद्देश्य से भूजल के उचित दोहन एवं प्रबंधन हेतु रिमोट सेन्सिंग एवं भू-भौतिकी तकनीकों को समन्वित प्रयोग किया जा रहा है।रिमोट सेंन्सिग तथा भू-भौतिकी विधियों के समन्वय द्वारा यह कार्य कम समय एवं कम लागत में किया जा सकता है।प्रदेश के समस्त राजस्व मण्डलों के विभिन्न जनपदों में लघु सिंचाई विभाग, उ0प्र0 जल निगम, यू.पी. प्रोजेक्ट कारपोरेशन तथा अन्य उपयोगकर्ता विभागों की मांग पर उपग्रहीय आंकड़े के निर्वचन एवं सतही भूभौतिकी सर्वेक्षण के उपरान्त ट्यूबवेल हैण्डपम्प ड्रिलिंग हेतु उपयुक्त स्थलों का चयन उक्त परियोजना के माध्यम से इस केन्द्र द्वारा उपयोगकार्त विभागों की मांग के आधार पर प्रतिवर्ष सम्पादित किया जाता है।इस कार्य की सफलता को देखते हुए बुन्देलखण्ड एवं विंध्ययन क्षेत्र में वहां के किसानों द्वारा हजारों की संख्या में सर्वेक्षण के उपरान्त नलकूप लगाये गये, जिससे प्रदेश के उस पिछड़े क्षेत्र की सिंचन क्षमता में वृद्धि हुई है एवं इसका प्रदेश की जनता को सीधा लाभ मिल रहा है।वर्ष 2019-20 में प्रदेश के विभिन्न जनपदों में कुल 1495 बिन्दुओं पर सर्वेक्षण का कार्य किया गया।उक्त के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड के पठारी क्षेत्र जनपद महोबा के जैतपुर, पनवाड़ी करवई तथा चरखारी ब्लाक में ब्लास्ट वेलों के निर्माण हेतु 486 स्थलों का भू-जल सर्वेक्षणका कार्य किया गया, तथा जनपद झांसी के बबीना एवं मऊ रानीपुर ब्लाक में 135 ब्लास्ट वेलों के निर्माण हेतु भी भू-जल सर्वेक्षण का कार्य किया गया।

वर्तमान वर्ष 2020-21 में झांसी जनपद के विकास खण्ड मऊ रानीपुर में रिमोट सेन्सिंग एवंभू-भौतिकी तकनीकों का उपयोग कर कार्य किया जा रहा है।

2.<u>उत्तर प्रदेश में फसलों के अवशेष जलाने की मानिटरिंग का कार्यः</u>

उत्तर प्रदेश के जनपदों में फसलों के अवशेष जलाये जाने के अग्नि जनित प्वाइंट्स के आंकड़ों का सृजन एवंअपडेशन उपग्रहीय चित्रों के अध्ययन से किया जा रहाहै।प्रदेश के प्रमुख धान उत्पादक जनपदों के ऐसे गांव जहां पराली जलाई जा रही है उनकी सूचना सम्बंधित जनपद के जिला कृषि अधिकारी को दी जा रही है।

3. <u>उत्तर प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में समुचित विकास हेतु जी0आई0एस0 आधारित कम्प्यूटरीकृत निर्णय सहायक तंत्र का सृजनः</u>

सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक गांव एवं मजरे में स्थापित सभी प्रकार के प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों के लोकेशन जी0पी0एस0 के माध्यम से प्राप्त कर जनसंख्या के डाटा को लिंक कर जी0आई0एस0 डाटा बेस तैयार किये जा रहे हैं।विगत वर्ष 2019-20 में प्रदेश के 07 जनपदों क्रमशः गोरखपुर, वाराणसी, अयोध्या, सहारनपुर, आगरा, मेरठ एवंसुल्तानपुर के प्रत्येक गांव एवं मजरे में स्थापित सभी प्रकार के प्राथमिक, उच्चप्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों के लोकेशन प्राप्त कर भौगोलिक सूचना तंत्र (जी0आई0एस0) आधारित डाटा बेस तैयार किया जा चुका है।जिसका उपयोग नये प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय खोले जाने के मापदण्ड के अनुसार 01 किमी. पर प्राथमिक विद्यालय एवं 03 किमी. पर उच्च प्राथमिक विद्यालय की सुविधा के सृजन हेतु कम्प्यूटरीकृत निर्णय सहायक तंत्र के रूप में किया जा रहा है।इसी क्रम में वर्तमान वर्ष 2020-21 में प्रदेश के पांच और जनपदों क्रमशः अम्बेडकरनगर, अमेठी, बाराबंकी, फिरोजाबाद तथा फतेहपुर का जी0आई0एस0 आधारित डिजिटल डाटा बेस तैयार किया जा रहा है।